https://www.developindiagroup.co.in/

तैयारी की रणनीतियां

Prepared by : Develop India Group Highly Qualified Faculties

If you read this book, you can secure half preparation in the Examination

"यदि आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो आपकी आधी तैयारी स्वयम् ही हो जायेगी"

Published By
DEVELOP INDIA GROUP

https://www.developindiagroup.co.in/

तैयारी की रणनीतियां

STRATEGIES OF PREPARATION

Prepared by : Develop India Group Highly Qualified Faculties

"जुनून तो पैदा कीजिए यह परीक्षा आपको आसान लगने लगेगी,
अगर जुनून नहीं तो कुछ नहीं"

"यदि आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं,
तो आपकी आधी तैयारी स्वयम् ही हो जायेगी"

Published By
DEVELOP INDIA GROUP

PUBLISHED BY

Develop India Group

Allahabad (U.P.), India
email : editordevelopindia@gmail.com
Website : https://developindiagroup.co.in/

Edition : 2020

Develop India Group Aims

We conduct Study Material Programme, All India Correspondence Courses, Test Series Programmes for various competitive exams. All things prepared by our expert faculties. Our aims to provide quality of comprehensive materials in a single place at your home according to your requirement.

Notes Prepared by

All study notes of DEVELOP INDIA GROUP prepared by our expert team and revised time to time. We have published these notes with carefully, but we can't take gaurantee for human as well as printing mistakes. If you want to give your feedback you can write us email : **subscriptiondevelopindia@gmail.com**

Terms & Conditions

If you want to buy any kind of study materials/previous year question papers, you can contact us.

Privacy Policy & Copywrite

All matter compile in this notes from various sources believed to be reliable. We published very carefully to this matter, its authors can not take guarantee the occuracy or completeness of any information published herein and neither Develop India Media Group nor its authors shall be responsible for any errors, omissions or damage arising out of use of this information.

No part of this notes may be reproduce or transemitted without the written permission of the publisher.

@ All right reserved. Refund is not available.

Note : All disputes will respect to this publication shall be subject to jurisdiction of the courts, tribunals and forums of Allahabad, India.

CORPORATE OFFICE

Develop India Media Group

Allahabad (U.P.); India
emails : editordevelopindia@gmail.com
Website : https://developindiagroup.co.in/

तैयारी की रणनीतियां

अगर आप सिविल सर्विस एग्जाम की तैयारी कर रहे हैं तो एग्जाम क्लियर करने के लिए आपको कोचिंग की जरूरत नहीं है. आप चाहें तो सेल्फ असेस्मेंट से भी एग्जाम क्लियर कर सकते हैं. इसके लिए जरूरी है कि एक रणनीति बनाएं उसी के अनुसार अपनी तैयारी करें. खासकर समय की कमी को देखते हुए सवालों को हल करने की प्रैक्टिस करें. ऐसे ही कुछ टिप्स जो आपके लिए काफी मददगार साबित होंगे.

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वालों की एक बहुत बड़ी कमी है कि अधिकांश प्रतियोगी केवल प्रीलिम्स परीक्षा की ही तैयारी करते हैं. उनकी योजना होती है कि प्रीलिम्स में सफल होने के बाद मेन की तैयारी करेंगे. यह तो एक स्थापित सत्य है कि आईएएस बनाने वाली सिविल सेवा परीक्षा दुनिया की कठिन परीक्षाओं में से एक मानी जाती है. जब मैं युवाओं से पूछता हूं कि उन्हें ऐसा क्यों लगता है, तो सभी से एक ही उत्तर मिलता है. वह यह कि इसमें 10–12 लाख स्टूडेंट्स बैठते हैं, जिनमें से अधिकतम एक हजार का सेलेक्शन होता है. उनके द्वारा बताये गये ये आंकडे सही होते हैं और अगर सफलता का प्रतिशत 0.1 प्रतिशत हो, तो उसे कठिन कहा ही जाना चाहिए, लेकिन क्या आंकडों का सच इसकी कठिनता के सच को पूरी तरह बयां करता है ? इसके इस दहशत से उबरने के लिए उसकी सच्चाई को जानना जरूरी है.

सिविल सेवा परीक्षा के तीन स्तर होते हैं और यह दस–बारह लाख का आंकडा पहले स्तर का है. प्रत्येक स्तर में सेलेक्ट होने वाला प्रतियोगी अगले स्तर में पहुंचता जाता है. चौथा स्तर अंतिम चयन सूची का होता है. पहली बात, जो ध्यान में रखी जानी चाहिए, वह यह कि यह संख्या परीक्षा में बैठने वालों की नहीं है, बल्कि बैठने के लिए फार्म भरने वालों की है. मुझे एक भी ऐसा साल याद नहीं है, जबकि परीक्षा में बैठने वालों का प्रतिशत आवेदन करने वालों के आधे से अधिक हो. यानी कि पांच लाख तो इसमें से यूं ही घट गये. अब हमें आंकड़ों की सच्चाई को पकड़ने के लिए प्रतियोगियों के चरित्र की ओर जाना होगा. जिस परीक्षा में 50 प्रतिशत लोग बैठते ही नहीं हैं, वहां यह सोचने की बात है कि जो लोग बैठते हैं, उनकी तैयारी का स्तर क्या रहता होगा. बहुत से लोग न बैठने से तो बैठ जाना ही अच्छा है जैसे सिद्धांत का पालन करते हुए बैठते हैं. ये लोग जानते हैं कि इसमें कुछ भी होना–जाना नहीं है. फिर भी वे बैठते हैं, क्योंकि उन्हें अपने पेरेन्टस को जवाब जो देना होता है. सामान्य वर्ग के लोग इस परीक्षा में अधिकतम पांच बार तथा शेष वर्ग के लोग 7–7 बार या उससे भी ज्यादा बार तक बैठ सकते हैं.

बिना तैयारी के भी होते हैं हिस्सा

सफलता मिलनी है एक ही बार में. इसलिए भी स्टूडेन्ट बैठने में कंजूसी नही दिखाते. वे बैठ जाते हैं, लेकिन केवल बैठने के लिए, बिना कुछ तैयारी के ही. ऐसे प्रतियोगियों की संख्या कम नहीं होती है. कुल बैठने वालों में 50 फीसदी इसी श्रेणी के होते हैं. सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वालों की एक बहुत बड़ी कमी यह पाई गई है कि अधिकांश प्रतियोगी केवल प्रारंभिक परीक्षा की ही तैयारी करते हैं. उनकी योजना होती है कि प्रारम्भिक परीक्षा में सफल होने के बाद मुख्य परीक्षा की तैयारी करेंगे. ऐसा सोचकर वे दो ऐसी बड़ी गलतियां कर रहे होते हैं, जो उन्हें फाइनल लिस्ट तक पहुंचने नहीं देती.

तैयारी की रणनीति सटीक होनी चाहिए

पहला तो यह कि वे इस स्पष्ट और बड़ी सच्चाई को समझ ही नहीं पाते कि मुख्य परीक्षा की तैयारी के बिना प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी हो ही नहीं सकती. इसलिए आप ऐसे प्रतियोगियों को भी इस दंगल से परीक्षा परिणाम निकलने के पहले ही बाहर किया जा सकता है. और अगर बिल्कुल बार्डर अंक लाकर सफल हो भी जाते हैं, तो दूसरी बात यह है कि मुख्य परीक्षा में उनका बाहर होना उनकी अनिवार्य नियति होती है. यदि कोई सोचता है कि वह केवल तीन महीने में मुख्य परीक्षा की तैयारी कर लेगा, तो उसके लिए यही कहा जा सकता है कि वह बहुत बड़ी गलतफहमी में है.

आपको इस श्रेणी के बहुत सारे लोग मिल जायेंगे, जो हर साल प्रारम्भिक परीक्षा में सफलता का जश्न मनाते ही रह गये. अगर आप मेरा विश्वास कर सकें, तो प्रारम्भिक स्तर पर अधिकतम एक लाख प्रतियोगी ही ऐसे होते हैं, जिन्हें आप थोड़ी गम्भीरता से ले सकते हैं और एक लाख

Develop India Group

में एक हजार का चयन बहुत बुरा नहीं कहा जा सकता, विशेषकर उस बात को ध्यान में रखते हुए कि यह आँकड़ा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के सामानान्तर ही है.

***सफलता प्राप्त* करने के लिए क्या करना चाहिए ?**

1. सभी महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स पर फोकस करना होगा : कैंडिडेट्स को इकोलॉजी, एंवायरमेंट, आर्ट और कल्चर सहित सभी महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स पर फोकस करना होगा. इन सभी टॉपिक्स की अच्छे से तैयारी करनी होगी खासकर इनकी स्टडी के लिए ऐसे नोट्स बनाएं जिनमें विषय को विस्तार से समझाया गया हो.

2. सही किताबों का करें चयन : कई किताबों को पढ़ने से अच्छा है एक ऐसी क्वॉलिटी की किताब पढ़ें जिससे आपके बेसिक कॉन्सेप्ट क्लियर हो जाएं.

3. डेवेलप इंडिया ग्रुप स्टडी नोट्स की लें मदद : टॉपिक्स की अच्छे तरीके से पढ़ाई के लिए जरूरी है कि आप उससे जुड़े नोट्स पढें. नोट्स की मदद से आप सिलेबस को एक नजर में रिवाइज कर सकते हैं.

4. मॉक टेस्ट पेपर से करें तैयारी : स्टूडेंट्स मॉक टेस्ट पेपर और पिछले सालों के पेपर्स से से तैयारी कर सकते हैं. मॉक टेस्ट से तैयारी कर आप अपनी स्पीड तो बढ़ा ही सकते हैं बल्कि इसकी मदद से सवालों को जल्दी हल करने की समझ भी बढ़ती है.

5. अपने बेसिक रखें क्लियर : कैंडिडेट्स को बदले हुए पैटर्न के अनुसार अपने बेसिक क्लियर करने होंगे. सिविल सर्विस प्री एग्जाम के लिए काफी कम समय रहता है इसलिए कैंडिडेट्स को बेसिक पर काफी मेहनत करनी होगी.

6. नियमित रूप से पढ़ें अखबार : उम्मीदवारों को एग्जाम में सक्सेस पाने के लिए अच्छे से और रोजाना 2–3 अखबार को पढ़ना चाहिए. अखबार से देश–दुनिया, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और खेल जगत की जानकारी तो मिलती ही है साथ ही गैर राजनीतिक संपादकीय से अधिकतर विषयों के बारे में विस्तार से पता चलता है.

7. एनसीईआरटी की किताबों को जरूर पढ़ें : सिविल सर्विस एग्जाम की तैयारी कर रहे स्टूडेंट्स को एनसीईआरटी की किताबें जरूर पढ़नी चाहिए. आप इन किताबों से शॉर्ट नोट्स भी बना सकते हैं.

8. रटने से अच्छा है विषय को समझें : अगर आप किसी विषय को रट रहे हैं तो आप कुछ समय बाद भूल जाएंगे इसलिए घटनाओं के विश्लेषण करने की आदत डालें. इससे आप उसे हमेशा याद रखेंगें. इसके लिए आप इंटरनेट की मदद ले सकते हैं और घटनाओं के आगे और पीछे के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर विश्लेषण कर सकते हैं.

9. मुख्यतः इस कठिन परीक्षा में सफलता पाने के लिये अभ्यर्थियों में शैक्षिक योग्यता के साथ अनुशासन व धैर्य होना अतिआवश्यक है, और एक समझदार अभ्यर्थी को यह चाहिये कि वह इस परीक्षा की तैयारी शुरू करने से पहले यह निर्धारित करले कि उसमे पर्याप्त व उचित योग्यता, अनुशासन और धैर्य है, जिससे वह इस परीक्षा में निश्चित सफलता प्राप्त कर सके।

10. अध्ययन अवधि को धीरे–धीरे बढाये और परीक्षापयोगी तथ्यों का रट्टा मारने के बजाय उसकी विषयवस्तु को समझें और अपनी अवधारणात्मक समझ को बढायें तभी इस परीक्षा में सफलता पाना संभव हो सकता है।

11. *समय प्रबंधन* : लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, परीक्षा में शामिल महत्वपूर्ण विषयों के लिए उचित समय आवंटित करने की आवश्यकता है। सबसे पहले आप कमजोर क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करें और उन्हें सुधारने में अपना अधिक से अधिक समय बिताने की कोशिश करें। उन विषयों में जिनमें आप समर्थ हैं उनके अभ्यास में थोड़ा कम समय आवंटित करें।

Develop India Group

निबंध में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें?

प्रारंभ में अभ्यर्थी निबंध लिखने में सहज नही होते हैं, इसी के कारण अपने प्रयास में असफल भी हो जाते हैं। इस पेपर के लिये यह आवश्यक है कि हमें निबंध लिखते समय विषय से संबंधित उपयुक्त जानकारी व विश्लेषण देना है, इसलिये निबंध लिखते समय क्या होना चाहिये और क्या नहीं होना चाहिये, यह जानना जरूरी है।

निबंध के महत्व को देखते हुये हमें निबंध प्रमुख अंग जैसे निबंध के विषयों का परिचय, उसका निष्कर्ष, विचारों के प्रवाह तथा उदाहरणों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके लिये आप निबंध लेखन अभ्यास कर सकते हैं, उदाहरण के लिये एक अच्छा निबंध लिखते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये।

निबंध के शुरुआत मे परिचय के ठीक बाद से हमें उस विषय पर अपना स्टैंड स्पष्ट करना चाहिए। निबंध में जितना संभव हो सके विषय से जुड़े आयामों को कवर करना चाहिए और प्रति अनुच्छेद के लिये आपके पास एक उचित विचार होना चाहिए। निबंध में दिये जाने वाले विचार, उदाहरण व विशलेषण जितना संभव हो उतने आसान होने चाहिए। मतलब यह कि, बच्चे भी आपके निबंध को समझ सकें। अधिकतर उम्मीदवारों के निबंधों में आवश्यकता से अधिक व असंगत स्पष्टीकरण होने के कारण वो उसे को जटिल बना देते हैं, जो कभी भी अच्छे अंक नहीं देता है।

निबंध के प्रश्नों तथा कुछ विश्लेषणात्मक प्रश्नों के लिये इस प्रवृत्ति से बचना चाहिये। किंतु यदि परीक्षा में पूछे गये प्रश्न की प्रकृति ही ऐसी हो कि उसमें विभिन्न विषय वस्तुओं के आपसी संबंध अथवा वर्गीकरण इत्यादि की आवश्यकता हो तो रेखाचित्र का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

Develop India Group

Success Tips

IAS Prelims

Last 15 year experience we can say those who are unable to qualifying in IAS Prelims Examination, should join Develop India Group and read complete study notes. We assured all of you will meet sure success in this prestigious exam.

Develop India Group Provides details
"To the point" materials for IAS Prelims Examination

So subscribe today if you want to success !!!!

Civil Services Exam

Complete Study Notes

(Available in English & Hindi Medium)

Prelims Exam revised study notes @ 4500/-
Main Exam revised study notes @ 5000/-
COMBO PACK (Pre & Main) @ 9,000/-

Why us ?

1. We will provide you complete study notes according to revised syllabus
2. Also give you success mantra with some answer writing tips
3. Mock test series will also provide you

Last year 70% questions asked from Develop India Group study notes in IAS prelims & main exam

Contact us for more details **+91 8756987953**

तैयारी की रणनीतियां

परीक्षा देते समय सबसे पहले 2 से 3 मिनट के समय में प्रश्नपत्र पर एक नजर डालें और उन प्रश्नों का चयन करें जो आपको सरल लगें। पहले चरण में तकरीबन 10 प्रश्न या अधिक चुनें, और उन्हें पहले प्रयास मे हल करें। दूसरे चरण में उन प्रश्नों के लिए प्रयास करें जिनके उत्तर समझने के लिये आपको थोड़ा समय और अनुमान की आवश्यकता हो। जीएस का एथिक्स पेपर आमतौर पर बहुत लंबा होता है और कई अभ्यर्थी इसे समय के भीतर हल करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। अच्छे अंक और रैंक प्राप्त करने के लिये आपको अधिक से अधिक परीक्षण और समय सीमा के साथ अभ्यास करके अपनी गति में सुधार करना होगा।

उत्तर–पुस्तिका की जाँच करने वाले परीक्षक को इस बात की बिल्कुल जानकारी नहीं होती कि उत्तर–पुस्तिका किस उम्मीदवार की है, उसने कितनी गंभीरता से पढ़ाई की है या उसकी परिस्थितियाँ कैसी हैं इत्यादि।

परीक्षक के पास अभ्यर्थी के मूल्यांकन का एक ही आधार होता है और वह यह कि अभ्यर्थी ने अपनी उत्तर–पुस्तिका में किस स्तर के उत्तर लिखे हैं? अगर आपके उत्तर प्रभावी होंगे तो परीक्षक अच्छे अंक देने के लिये मजबूर हो जाएगा और यदि उत्तरों में दम नहीं है तो फिर आपने चाहे जितनी भी मेहनत की हो, उसका कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकलेगा।

आपकी सफलता या विफलता में तैयारी की भूमिका 50 प्रतिशत से अधिक नहीं है। शेष 50 प्रतिशत भूमिका इस बात की है कि परीक्षा के तीन घंटों में आपका निष्पादन कैसा रहा? आपने कितने प्रश्नों के उत्तर लिखे? किस क्रम में लिखे, बिंदुओं में लिखे या पैरा बनाकर लिखे, रेखाचित्रों की सहायता से लिखे या उनके बिना लिखे, साफ–सुथरी हैंडराइटिंग में लिखे या अस्पष्ट हैंडराइटिंग में, उत्तरों में तथ्यों और विश्लेषण का समुचित अनुपात रखा या नहीं– ये सभी वे प्रश्न हैं जो आपकी सफलता या विफलता में कम से कम 50: भूमिका निभाते हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि अधिकांश उम्मीदवार इतने महत्त्वपूर्ण पक्ष के प्रति प्रायः लापरवाही बरतते हैं और उनमें से कई तो अपने कॉलेज के बाद के जीवन का पहला उत्तर मुख्य परीक्षा में ही लिखते हैं।

मुख्य परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है जिसमें प्रश्नों के उत्तर को निर्धारित शब्दों (सामान्यतः 100 से 300 शब्द) में उत्तर–पुस्तिका में लिखना होता है, अतः ऐसे प्रश्नों के उत्तर लिखते समय लेखन शैली एवं तारतम्यता के साथ–साथ समय प्रबंधन आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

लेखन शैली एवं तारतम्यता का विकास सही दिशा में निरंतर अभ्यास से संभव है, जिसके लिये अभ्यर्थियों को विषय की व्यापक समझ के साथ–साथ कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का भी ध्यान रखना चाहिये।

हमारा उद्देश्य यही समझाना है कि उम्मीदवारों को शुरू से ही उत्तर–लेखन शैली के विकास के लिये क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिये?

बिंदुओं व पैराग्राफ में लिखें

परिचय : प्रश्न में पूछे गये विषय से मुख्य शब्द लें और उसे परिचय भाग के अंतर्गत समझाएं।

शीर्षक व भूमिका : उत्तर के प्रारंभ में ऐसे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिये जो भूमिका की आवश्यकता को पूर्ण कर दें। प्रश्न यदि किसी मुद्दे पर आधारित है तो कुछ (2–3) पंक्तियों में उसका निष्कर्ष भी लिखा जा सकता है, लेकिन यह ध्यान रहे कि तथ्यात्मक प्रश्नों के लिये किसी विशेष निष्कर्ष की आवश्यकता नहीं होती है।

यह भी ध्यान दें, कि आपके उत्तरों मे जानकारी प्वाइंट्स तक सीमित नही होना चाहिये, बल्कि हेडिंग्स (शीर्षक) का भी प्रयोग करना चाहिये। विषयों व टापिकों के उत्तर देते समय शीर्षकों के उपयोग से आप अपने उत्तरों को अलग–अलग भागों में सुव्यवस्थित रूप से दे सकते हैं। यदि किसी प्रश्न के उत्तर के लिये कई अलग–अलग तथ्यों व बिन्दुओं को रखना आवश्यक है तो उसके लिये आप बिन्दुओं का प्रयोग अवश्य कर सकते

Develop India Group

हैं।

शीर्षकों, उप–शीर्षकों, महत्वपूर्ण बिंदुओं व व्यक्तिगत विषलेशण (यदि आवश्यक है तो) पर आधारित उत्तर आपको इस परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद करेंगे।

रेखाचित्रों का प्रयोग : आरेख/चित्र प्रश्नों के उत्तर के लिये आरेखों का बहुत महत्त्व होता है, जैसे कि भूगोल या अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए भारत और विश्व के मानचित्र इत्यादि। इसके अलावा एनसीईआरटी किताबों से जिओग्राफी के लिए चित्र तैयार किए जाने का अभ्यास करें। भूगोल के पेपर –1 में कई प्रकार के भौगोलिक विषयों पर प्रश्न आते हैं और आरेख इत्यादि के माध्यम से आप एक अच्छा उत्तर बना सकते हैं।

प्रवाह तालिका/फ्लोचार्ट : मुख्य परीक्षा में (प्रौद्यौगिकी, आर्थिक विकास, जैव–विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन) के लिये फ्लोचार्ट इत्यादि का उपयोग किया जाता है। यदि आप फ्लोचार्ट के साथ साइड हेडिंग को भी सम्मिलित करें तो सामान्य अध्ययन पेपर में सामजिक मुद्दों से जुडे उत्तरों के लिये आप अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं। परीक्षा में पूछे गए प्रश्न में विभिन्न विषय वस्तुओं के के वीच के संबंधों एवं वर्गीकरण इत्यादि की उल्लेख की आवश्यकता होने पर रेखाचित्रों आदि का प्रयोग उपयोगी रहेगा।

अभ्यर्थियों के लिये अति आवश्यक है कि प्रश्नों में पूछे जाने वाले मुद्दों व विषयों के उत्तरों देते समय विषय के ज्ञान की गहराई से अधिक उसके विश्लेषण तथा जितना संभव हो उतना उनसे जुडे आयामों को कवर करने का प्रयास करें। यह ध्यान रखें कि यूपीएससी बोर्ड आपके दिये गये उत्तरों में पूछे गये टापिक से जुड़े आयामों को जानने और उन्हें समझने में दिलचस्पी रखता है। वहीं दूसरी तरफ ऐसा भी मानते हैं, कि अवश्यकता से अधिक गहन विद्वानों जैसे बहुत बड़े–बड़े उत्तर सिविल सेवा परीक्षा की कसौटी के अनुकूल नहीं होते।

सामान्य अध्ययन या करंट अफेयर्स की तैयारी के दौरान उत्तर लिखने के लिये इसी तरीके को अपनाना चाहिये। इस प्रकार खुद को प्रशिक्षण देने से आप परीक्षा के दिन सभी आवश्यक आरेख, प्रवाह चार्ट, साइड–हेडिंग इत्यादि का प्रयोग करनें में सहज होंगे और इसकी रूपरेखा बनाने में भी अधिक समय नहीं लगेगा। जीएस में आपसे जितने सवाल हो सकते हैं उतने प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करनी चाहिए।

महत्वपूर्ण बिन्दु

√ उत्तरों के लिये लिखे गये पैराग्राफ के बीच उचित जगह (पैराग्राफ ब्रेक) रखें, जिससे पैराग्राफ का अंतर साफ–साफ समझ में आए।

√ अपने उत्तरों में लिखे गये महत्वपूर्ण वाक्यों/शब्दों को उचित रूप (बहुत अधिक नहीं) से रेखांकित करें।

√ परीक्षा में केवल नीले और काले पेन का प्रयोग करते हुये, नीली कलम से उत्तर लिखें तथा काले पेन से महत्वपूर्ण भागों रेखांकित करने का कार्य करें।

√ हैंडराइटिंग यानि आपकी लिखावट, जितनी सुन्दर होगी उतने की अतिरिक्त अंक आप अर्जित करेंगे।

√ उत्तर पुस्तिका को साफ–सुथरा रखें तथा ओवर राईटिग व अनावश्यक काटा–पीटी से बचें।

उत्तर–लेखन के विभिन्न चरण

उत्तर–लेखन की संपूर्ण प्रक्रिया को नीचे दिये गए चार चरणों में विभाजित करके समझा जा सकता है–

1. प्रश्न को समझना तथा सुविधा के लिए उसे कई टुकघे में बाँटना
2. उत्तर की रूपरेखा तैयार करना
3. उत्तर लिखना
4. उत्तर के प्रस्तुतीकरण को आकर्षक बनाना।

प्रश्न को समझना तथा टुकडों में बाँटना

उत्तर–लेखन प्रक्रिया का सबसे पहला चरण यही है कि उम्मीदवार प्रश्न को कितने सटीक तरीके से समझता है तथा उसमें छिपे विभिन्न उप–प्रश्नों तथा उनके पारस्परिक संबंधों को कैसे परिभाषित करता है? सच तो यह है कि आधे से अधिक अभ्यर्थी इस पहले चरण में ही गंभीर

गलतियाँ कर बैठते हैं।

प्रश्न को समझने का अर्थ यह है कि प्रश्नकर्त्ता हमसे क्या पूछना चाहता है? कई बार प्रश्न की भाषा ऐसी होती है कि हम संदेह में रहते हैं कि क्या लिखें और क्या छोडें? इस समस्या का निराकरण करने के लिये प्रश्न को समझने की क्षमता का विकास करना आवश्यक है।

प्रश्न को ठीक से समझने के लिये मुख्यतः दो बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिये–

1. प्रश्न के अंत में किस शब्द का प्रयोग किया गया है।
2. प्रश्न के कथन में कितने तार्किक हिस्से विद्यमान हैं और उन सभी में आपसी संबंध क्या हैं?

प्रश्न के अंत में दिये गए शब्दों से आशय उन शब्दों से है जो बताते हैं कि प्रश्न के संबंध में अभ्यर्थी को क्या करना है? ऐसे शब्दों में विवेचन कीजिये, विश्लेषण कीजिये, प्रकाश डालिये, व्याख्या कीजिये, मूल्यांकन कीजिये, आलोचनात्मक मूल्यांकन, परीक्षण, निरीक्षण, समीक्षा, आलोचना, समालोचना, वर्णन/विवरण एवं स्पष्ट कीजिये/स्पष्टीकरण दीजिये इत्यादि शामिल हैं।

इन शब्दों के आधार पर तय होता है कि परीक्षक अभ्यर्थी से उत्तर में क्या उम्मीद कर रहा है? यह सही है कि बहुत से परीक्षक खुद ही इन शब्दों के प्रति हमेशा चौकस नहीं रहते, किंतु अभ्यर्थियों को यही मान कर चलना चाहिये कि परीक्षक इन्हीं शब्दों को आधार बनाकर ही उत्तर का मूल्यांकन करते हैं।

इसको ध्यान में रखते हुए हमने कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों को विभिन्न वर्गों में बाँटकर उसके सही आशय को स्पष्ट किया है जिससे आपके उत्तर को एक सही दिशा मिल सके।

व्याख्या/वर्णन/विवरण/स्पष्ट कीजिये/स्पष्टीकरण दीजिये/प्रकाश डालिये

√ इन सभी शब्दों से प्रायः समान आशय व्यक्त होते हैं।

√ ऐसे प्रश्नों में अभ्यर्थी से सिर्फ इतनी अपेक्षा होती है कि वह पूछे गए प्रश्न से संबंधित जानकारियाँ सरल भाषा में व्यक्त कर दे।

√ वर्णन और विवरण वाले प्रश्नों में तथ्यों की गुंजाइश ज्यादा होती है जबकि 'व्याख्या कीजिये', 'प्रकाश डालिये' या 'स्पष्टीकरण दीजिये' वाले प्रश्नों में पूछे गए विषय को सरल भाषा में समझाते हुए लिखने की अपेक्षा होती है।

आलोचना/समीक्षा/समालोचना/परीक्षा/परीक्षण/निरीक्षण/गुण–दोष विवेचन

√ इन सभी प्रश्नों को एक वर्ग में रखा जा सकता है।

√ ऐसे प्रश्न उम्मीदवार से किसी तथ्य या कथन की अच्छाइयों और बुराइयों की गहरी समझ की अपेक्षा करते हैं।

√ आलोचना शब्द से यह भाव जरूर निकलता है कि अभ्यर्थी को इसमें पूछे गए विषय से जुडी नकारात्मक बातें लिखनी हैं किंतु सच यह है कि आलोचना का सही अर्थ गुण और दोष दोनों पक्षों पर ध्यान देना है।

√ मोटे तौर पर अनुपात यह रखा जा सकता है कि समीक्षा/समालोचना/परीक्षण/परीक्षण/निरीक्षण जैसे प्रश्नों में अच्छे और बुरे पक्षों का अनुपात लगभग बराबर रखा जाए जबकि आलोचना वाले प्रश्नों में नकारात्मक पक्षों का अनुपात कुछ बड़ा दिया जाए अर्थात् 70–75 प्रतिशत तक कर दिया जाए।

मूल्यांकन/आलोचनात्मक मूल्यांकन

√ मूल्यांकन का अर्थ है किसी कथन या वस्तु के मूल्य का अंकन या निर्धारण करना।

√ ऐसे प्रश्नों में अभ्यर्थी से अपेक्षा होती है कि वह पूछे गए विषय का सार्वकालिक या वर्तमान महत्त्व रेखांकित करे, उसकी कमियाँ भी बताए और अंत में स्पष्ट करे कि उस कथन या वस्तु की समग्र उपयोगिता कितनी है?

√ मूल्यांकन से पहले आलोचनात्मक लिखा हो या नहीं, तार्किक रूप से दोनों बातों को एक ही समझना चाहिये।

√ मूल्यांकन की कोई भी गंभीर प्रक्रिया तभी पूरी हो सकती है जब उसके मूल में आलोचनात्मक पक्ष का ध्यान रखा गया हो।

√ सार यह है कि आलोचनात्मक मूल्यांकन वाले प्रश्नों में अभ्यर्थी को पहले गुण और दोष बताने चाहियें और अंत में उन दोनों की तुलना के आधार पर यह स्पष्ट करना चाहिये कि उस कथन या वस्तु का क्या और कितना महत्त्व है?

Develop India Group

विवेचन/मीमांसा

√ मीमांसा का अर्थ होता है किसी विषय को व्यवस्थित तथा संपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना।

√ ऐसे प्रश्नों का उत्तर लिखना कठिन नहीं होता। उस प्रश्न से संबंधित सभी संभव पक्षों को मिलाकर लिख देना पर्याप्त होता है।

√ विवेचन वाले प्रश्नों में भी मूल अपेक्षा यही होती है।अंतर सिर्फ इतना होता है कि इसमें किसी कथन या तथ्य की चर्चा करते हुए तार्किक व्याख्या की ज्यादा अपेक्षा होती है।

विश्लेषण

√ विश्लेषण तथा संश्लेषण परस्पर विरोधी शब्द हैं। जहाँ संश्लेषण का अर्थ बिखरी हुई चीघें को जोघ्कर एक करना होता है, वहीं विश्लेषण का अर्थ होता है– किसी एक विचार या कथन को सरल से सरल हिस्सों में विभाजित करना।

√ किसी कथन का विश्लेषण करते हुए अभ्यर्थी को अपने मन में क्या, क्यों, कैसे, कब, कहाँ, कितना जैसे संदर्भों को आधार बनाना चाहिये।

प्रश्नों का तार्किक विखंडन

√ सरल भाषा में कहें तो तार्किक विखंडन का अर्थ है जटिल वाक्य को कुछ सरल वाक्यों में तोड़कर उसमें अंतर्निहित उप–प्रश्नों की पहचान करना।

√ सरल कथनों में तो यह समस्या सामने नहीं आती किंतु जैसे ही जटिल वाक्य–संयोजन वाले प्रश्न उपस्थित होते हैं, अभ्यर्थी के समक्ष उनकी व्याख्या और अर्थ–बोध से जुड़ी कठिनाइयाँ प्रकट होने लगती हैं।

√ ऐसी स्थिति में अभ्यर्थी को मुख्य रूप से उन मात्रा–सूचक या तीव्रता–सूचक शब्दों पर ध्यान देना चाहिये जो प्रश्न का फोकस निर्धारित करते हैं।

उदाहरण के लिये, यदि प्रश्न है कि 1975 में घोषित राष्ट्रीय आपातकाल स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे विवादास्पद समयों में से एक के रूप में देखा जाता है।' मूल्यांकन कीजिये। तो इसमें 'सबसे विवादास्पद समयों में से एक' वाक्यांश पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। इसमें निहित है कि आपातकाल स्वतंत्र भारत के इतिहास का अकेला विवादास्पद समय नहीं रहा है बल्कि कई विवादास्पद समयों में से एक है। इसके साथ–साथ, इसमें यह भी निहित है कि इस प्रश्न में अभ्यर्थी को हर विवादास्पद समय पर टिप्पणी नहीं करनी है बल्कि उन गिने–चुने विवादास्पद समयों पर चर्चा करनी है जिनकी तुलना में शेष विवादास्पद समय कम तीव्रता वाले रहे हैं।

इस प्रश्न में अभ्यर्थी को दिये गए कथन का विखंडन कई उप–प्रश्नों में करना होगा, जैसे– 1975 का आपातकाल अत्यंत विवादास्पद काल क्यों माना जाता है, स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे अधिक विवादास्पद काल कौन–कौन से माने जा सकते हैं, तथा सर्वाधिक विवादास्पद कालों की तुलना में 1975 के आपातकाल की क्या स्थिति रही है?

उत्तर की रुपरेखा तैयार करना

उत्तर–लेखन प्रक्रिया के दूसरे चरण के अंतर्गत उत्तर की एक संक्षिप्त रूपरेखा बनाई जा सकती है।

कई अभ्यर्थी इस प्रक्रिया का प्रयोग करने से बचते हैं और समय बचाने के लिये सीधे उत्तर लिखने की शुरुआत कर देते हैं। अगर उनकी लेखन क्षमता बहुत सधी हुई न हो तो तय मानकर चलिये कि उनके उत्तर में अव्यवस्था तथा बिखराव का आना स्वाभाविक है। बेहतर यही है कि अभ्यर्थी दस मिनट की जगह आठ मिनट में ही उत्तर लिखे किंतु उसका उत्तर बिल्कुल सधा हुआ हो।

बहुत अच्छी लेखन क्षमता वाले कुछ अभ्यर्थियों का स्तर तो इतना ऊँचा होता है कि वे प्रश्न को पघ्ते ही मन–ही–मन उत्तर की रूपरेखा तैयार कर लेते हैं और सीधे उत्तर–लेखन की शुरुआत कर देते हैं। पर यह क्षमता अर्जित करना एक लंबी और श्रमसाध्य प्रक्रिया है जिसे हर अभ्यर्थी में नहीं पाया जा सकता।

नए अभ्यर्थियों के लिये यही बेहतर है कि वे उत्तर की शुरुआत करने से पहले थोघ सा समय रूपरेखा या 'सिनोप्सिस' बनाने पर खर्च करें।

रूपरेखा बनाने का अर्थ यह है कि उत्तर से संबंधित जो बिंदु अभ्यर्थी के दिमाग में हैं, उन्हें किसी रफ कागज पर लिखकर व्यवस्थित कर लिया जाए। जरूरी नहीं है कि हर बिंदु को लिखा ही जाए, यह भी हो सकता है कि अभ्यर्थी रेखाचित्र जैसे किसी फॉर्मेट में उसे तैयार कर ले।

उदाहरण के लिये, यदि प्रश्न है कि ष्एक कुशल नेतृत्व की वघ्ह से एक दुरूह संभावना को यथार्थ में परिवर्तित किया जा सका। भारतीय

रियासतों के एकीकरण के संदर्भ में इस कथन पर चर्चा कीजिये। तो इसकी संभावित रूपरेखा कुछ इस प्रकार बनाई जानी चाहिये–

1. ***भूमिका:*** पटेल और बिस्मार्क की तुलना।
2. ***दुरूह संभावना:*** 1947 की स्थिति, अंग्रेघें की योजना, कई रियासतों/राजाओं की स्वतंत्र रहने की इच्छा आदि।
3. ***कुशल नेतृत्व:*** पटेल की कार्य–क्षमता व कार्य–शैली का संक्षिप्त वर्णन।
4. ***निष्कर्ष:*** पटेल की भूमिका को बिस्मार्क तथा गैरीबाल्डी आदि की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध करना।

√ शुरू में अभ्यर्थी इसी फॉर्मेट पर रूपरेखा बनाते हैं। धीरे–धीरे वे इस प्रक्रिया के अभ्यस्त हो जाते हैं और सिर्फ कुछ टूटे–फूटे शब्द लिखने से भी उनका काम चल जाता है।

√ आपको मुख्य परीक्षा में बैठने से पहले रूपरेखा निर्माण का इतना अभ्यास कर लेना चाहिये कि परीक्षा भवन में केवल कुछ आधे–अधूरे संकेतों से ही रूपरेखा संबंधी कार्य पूरा हो सके।

√ परीक्षा भवन में समय के दबाव को देखते हुए यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक उत्तर को लिखने से पहले अभ्यर्थी उत्तर की रूपरेखा नहीं बना पाता। अगर आपके साथ भी गति का ऐसा संकट हो तो बेहतर होगा कि 20 में से शुरुआती 7–8 प्रश्नों का उत्तर आप संक्षिप्त रूपरेखाओं के आधार पर लिखें और बाद के प्रश्नों के उत्तर सीधे लिख दें।

उत्तर लिखना

√ एक अच्छा उत्तर वह है जो प्रश्न का उत्तर है।

√ प्रश्न की रूपरेखा तैयार हो जाने के बाद अभ्यर्थी को वास्तविक उत्तर–लेखन करना चाहिये।

√ एक अच्छे उत्तर की मुख्यतः दो विशेषताएँ होती हैं – प्रामाणिकता तथा प्रवाह।

√ प्रामाणिकता का अर्थ है कि उत्तर में ऐसे ठोस तथ्य और तर्क विद्यमान होने चाहियें जिनसे प्रश्न की वास्तविक मांग पूरी होती हो अर्थात् परीक्षक को उत्तर पडकर यह महसूस होना चाहिये कि अभ्यर्थी ने विषय का गंभीर अध्ययन किया है।

√ प्रवाह का अर्थ है कि उत्तर के पहले शब्द से अंतिम शब्द तक ऐसी क्रमबद्धता होनी चाहिये कि परीक्षक को उत्तर पघ्ते समय बीच में कहीं भी रुकना न पडे।

√ एक अच्छे उत्तर–लेखन के संबंध में प्रायः प्रत्येक अभ्यर्थी के मन में कुछ जिज्ञासाएँ अनिवार्य रूप से होती हैं जिनका समाधान करने का प्रयास किया गया है।

शब्द सीमा का पालन

√ प्रायः अभ्यर्थियों के मन में जिज्ञासा होती है कि उन्हें दी गई शब्द–सीमा के अंदर ही उत्तर लिखना है या इसमें थोघि बहुत छूट ली जा सकती है? अगर हाँ, तो कितनी?

√ इस प्रश्न का उत्तर जानने से पहले यह समझ लेना चाहिये कि लोक सेवा आयोग के लिये व्यावहारिक तौर पर यह संभव नहीं है कि वह हर अभ्यर्थी के उत्तरों की शब्द संख्या को गिनने की व्यवस्था कर सके। अतः अभ्यर्थियों को सबसे पहले इस दबाव से मुक्त हो जाना चाहिये कि उनके एक–एक शब्द की गणना की जाती है।

√ इस संबंध में एक सच यह भी है कि भले ही आयोग शब्दों की गणना न करता हो, पर परीक्षक अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर–पुस्तिका देखते ही यह अनुमान लगा लेता है कि उत्तर में शब्दों की संख्या लगभग कितनी है।

√ शब्दों की संख्या बहुत अधिक या बहुत कम होने पर ही परीक्षक का ध्यान उस ओर जाता है। ऐसी स्थिति में उसके पास यह विवेकाधीन शक्ति होती है कि वह अभ्यर्थी को इस गलती के लिये दंडित करे या नहीं?

√ सार यह है कि शब्दों की सीमा का थोघ–बहुत उल्लंघन करने में समस्या नहीं है किंतु यह उल्लंघन 10–20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिये।

√ कुछ अभ्यर्थी इस बात को लेकर भी परेशान रहते हैं कि शब्दों की गणना में 'है', 'था', 'चाहिये' आदि शब्दों की गणना की जाती है या नहीं? उनमें से कुछ यह दावा भी करते हैं कि इन्हें उत्तर की शब्द–सीमा में शामिल नहीं किया जाता। वस्तुतः यह एक भ्रांति है। शब्दों की गणना

Develop India Group

में सभी प्रकार के शब्द शामिल होते हैं, चाहे वे योजक शब्द हों या अन्य शब्द। हाँ, यह जरूर है कि कोष्ठक में लिखे गए शब्दों को प्रायः शामिल नहीं किया जाता। इसी प्रकार, अगर कहीं समास भाषा का प्रयोग किया जाता है तो समास में आने वाले दोनों शब्दों को हाइफन की वजह से प्रायः एक शब्द ही मान लिया जाता है।

बिंदुओं में लिखें या पैराग्राफ में?

यह भी अधिकांश उम्मीदवारों की एक सामान्य जिज्ञासा है कि उन्हें उत्तर–लेखन के अंतर्गत बिंदुओं का प्रयोग करना चाहिये या नहीं? वस्तुतः इस प्रश्न का उत्तर हाँ या नहीं में देना संभव नहीं है। यह निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि प्रश्न की प्रकृति क्या है?

अगर प्रश्न की प्रकृति ऐसी है कि उसके उत्तर में विभिन्न तथ्यों या बिंदुओं को सूचीबद्ध किये जाने की आवश्यकता है तो निस्संदेह उसमें बिंदुओं का प्रयोग किया जाना चाहिये। किंतु अगर प्रश्न की प्रकृति शुद्ध विश्लेषणात्मक है तो बिंदुओं के प्रयोग से बचना आवश्यक है। ऐसा उत्तर पैराग्राफ पद्धति के अनुसार लिखना ही ठीक रहता है।

उदाहरण के तौर पर, अगर यह प्रश्न पूछ लिया जाए कि 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान घटने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण पाँच घटनाएँ कौन सी थीं?' तो इसके उत्तर में बिंदुओं का प्रयोग किया जाना चाहिये। एक छोटी–सी भूमिका लिखने के बाद अभ्यर्थी को सीधे 1–5 तक बिंदु बनाकर एक–एक तथ्य प्रस्तुत करते जाना चाहिये।

अगर यह प्रश्न पूछ लिया जाए कि जहाँ महात्मा गांधी जाति व्यवस्था की कुरीतियों पर कोई गंभीर चोट नहीं कर सके, वहीं डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था के मूल पर प्रहार किया। स्पष्ट कीजिये। इस प्रश्न की स्पष्ट अपेक्षा है कि उत्तर का पहला पैरा महात्मा गांधी के संबंध में और दूसरा पैरा डॉ. अम्बेडकर के संबंध में लिखा जाना चाहिये और दोनों ही पैराग्राफों में सिर्फ एक–एक बिंदु की व्याख्या किये जाने की जरूरत है। (स्पष्ट है कि ऐसे उत्तरों में बिंदुओं या शीर्षकों की भूमिका नहीं होती। यदि हम अनावश्यक बिंदुओं का प्रयोग करेंगे तो निस्संदेह नुकसान में ही रहेंगे)।

रेखाचित्रों का प्रयोग करें या नहीं?

अभ्यर्थियों के मन में एक दुविधा इस बात को लेकर भी रहती है कि उन्हें किसी उत्तर में रेखाचित्र (जैसे पाई डायग्राम, वेन डायग्राम, तालिका, फ्लो–चार्ट) आदि का प्रयोग करना चाहिये या नहीं?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि निबंध तथा विश्लेषणात्मक प्रश्नों में प्रायः इस प्रवृत्ति से बचना ही अच्छा रहता है। किंतु यदि प्रश्न की प्रकृति ही ऐसी हो कि उसमें विभिन्न वस्तुओं का आपसी संबंध या वर्गीकरण आदि दिखाए जाने की जरूरत हो तो रेखाचित्र का प्रयोग सहायक भी हो सकता है।

उदाहरण के लिये, अगर एथिक्स के प्रश्नपत्र में पूछ लिया जाए कि अपराध और पाप की धारणाओं में अंतर स्पष्ट करें। क्या यह जरूरी है कि हर अपराध पाप हो और हर पाप अपराध? तो इस प्रश्न के उत्तर में दो अवधारणाओं का संबंध स्पष्ट करने के लिये वेन डाइग्राम का प्रयोग कर लेना चाहिये। कई जटिल अवधारणाओं में अंतर जितनी आसानी से किसी डायग्राम के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है, उतनी आसानी से लिखित शब्दों के माध्यम से नहीं।

सार यह है कि जहाँ विभिन्न धारणाओं के पारस्परिक संबंधों या वर्गीकरण आदि को स्पष्ट करना हो, वहाँ रेखाचित्र शैली का प्रयोग करना हमेशा फायदेमंद होता है किंतु शुद्ध विश्लेषणात्मक प्रश्नों में ऐसे प्रयोगों से बचना चाहिये।

कैसी शब्दावली का प्रयोग करें?

उत्तर लिखने में भाषा–शैली की सरलता एवं सहजता बनाए रखना चाहिये। शब्दों के चयन में इतनी सावधानी बरतना अनिवार्य है कि उत्तर की गरिमा से समझौता न हो।

उर्दू, फारसी परंपरा के शब्दों का प्रयोग निबंध में तो कुछ मात्रा में किया जा सकता है किंतु सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्रों में ऐसी भाषा के प्रयोग से बचना चाहिये।

अंग्रेजी की शब्दावली का प्रयोग करने में समस्याएँ कम हैं। जहाँ भी कोई जटिल, तकनीकी शब्द पहली बार आए, वहाँ आपको कोष्ठक में अंग्रेजी का शब्द भी लिख देना चाहिये। कोष्ठक में लिखते समय आप रोमन लिपि का प्रयोग कर सकते हैं। अगर आप अंग्रेजी के किसी तकनीकी शब्द का प्रयोग देवनागरी लिपि में करते हैं तो उसके लिये कोष्ठक की जरूरत नहीं है। किंतु ध्यान रखें कि इस सुविधा का प्रयोग केवल बहुत

Develop India Group

जरूरी शब्दों के लिये ही किया जाना चाहिये। अगर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग सामान्य अनुपात से अधिक मात्रा में हुआ तो परीक्षक के मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

परीक्षा में सामान्यतः उस शब्दावली को अधिक महत्त्व दें जो संस्कृत मूल की अर्थात् तत्सम् है। ऐसी शब्दावली प्रायः अधिक औपचारिक मानी जाती है और परीक्षा के अनुशासन को देखते हुए परीक्षक इसे उचित समझते हैं। उदाहरण के लिये, 'प्रधानमंत्री जी अस्वस्थ्य है' कहने में जो औपचारिकता है, वह यह कहने में नहीं है कि 'वजीरे आजम साहब की तबीयत नासाज है।' इसलिये जहाँ तक संभव हो, अपनी शब्दावली को सरल, सहज किंतु तत्समी बनाए रखने का प्रयास करें।

भूमिका आदि लिखें या नहीं?

√ अभ्यर्थियों को इस प्रश्न पर भी पर्याप्त संदेह रहता है कि उन्हें अपने उत्तर की शुरुआत में भूमिका लिखनी चाहिये अथवा नहीं? इसी प्रकार, उत्तर के अंत में निष्कर्ष की आवश्यकता को लेकर भी संदेह बना रहता है।

√ आजकल सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषयों में 200–250 शब्दों से अधिक शब्द–सीमा वाले उत्तर नहीं पूछे जाते हैं। इसलिये, आजकल यह मानकर चलना ठीक है कि बिना किसी औपचारिक भूमिका के आप सीधे अपने उत्तर की शुरुआत कर सकते हैं।

√ उत्तर का पहला एकाध वाक्य ऐसा रखना चाहिये जो भूमिका की जरूरत को पूरा कर दे। अगर प्रश्न किसी विवाद पर आधारित है तो एक–दो पंक्तियों का निष्कर्ष भी दिया जाना चाहिये किंतु सामान्य तथ्यात्मक प्रश्नों में निष्कर्ष की कोई आवश्यकता नहीं है।

√ उदाहरण के लिये, अगर प्रश्न है कि 'स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर के तुलनात्मक योगदान पर चर्चा करें' तो उसकी संक्षिप्त भूमिका और निष्कर्ष क्रमशः इस प्रकार हो सकते हैं–

√ भूमिकाः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा का नेतृत्व यदि महात्मा गांधी कर रहे थे तो उसी समय डॉ. अम्बेडकर सदियों से वंचित दलित व आदिवासी समुदाय को मुख्यधारा में जोडने की कोशिश कर रहे थे। इन दोनों महान नेताओं के बीच तुलना के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं–

√ निष्कर्षः सार यह है कि यदि महात्मा गांधी की बड़ी भूमिका भारत को अंग्रेजों से आजाद कराने में थी तो डॉ. अंबेडकर की भूमिका हमें रूढ़ियों और शोषण से आजाद कराने में थी।

उत्तर के प्रस्तुतीकरण को आकर्षक बनाना

उत्तर–लेखन का अंतिम पक्ष यह है कि हम अपने उत्तर को ज्यादा सुंदर व प्रभावशाली कैसे बना सकते हैं? इसके कुछ प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैं –

उत्तर के सबसे महत्त्वपूर्ण शब्दों तथा वाक्यों को रेखांकित करना न भूलें, पर यह ध्यान रखें कि रेखांकन का प्रयोग जितनी कम मात्रा में करेंगे, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। कई विद्यार्थी लगभग हर पंक्ति को ही रेखांकित कर देते हैं जिसका कोई लाभ नहीं मिलता।

अभ्यर्थी को चाहिये कि वह काले और नीले दो रंगों के पेन का प्रयोग करे। जैसे वह नीले पेन से उत्तर लिख सकता है और काले पेन से महत्त्वपूर्ण हिस्सों को रेखांकित कर सकता है। पर यह ध्यान रखें कि इन दोनों रंगों के अलावा अन्य किसी भी रंग के पेन का प्रयोग करना नियम के विरुद्ध है।

आपकी लिखावट (हैंडराइटिंग) जितनी साफ–सुथरी होगी, आपको अधिक अंक मिलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

अच्छी हैंडराइटिंग से एक मनोवैज्ञानिक लाभ मिल जाता है जो अंततः अंकों के लाभ में परिणत होता है। अगर आपकी हैंडराइटिंग साफ नहीं है तो नुकसान होना तय है। इसलिये, अभी से कोशिश कीजिये कि हैंडराइटिंग कम से कम ऐसी जरूर हो जाए कि उसे पढते हुए परीक्षक को तनाव या सिर–दर्द न हो।

अपने शब्दों तथा पंक्तियों के मध्य खाली स्थान इस तरह से छोडें कि आपकी उत्तर–पुस्तिका आकर्षक नजर आए। दो पंक्तियों के बीच में जितना गैप छोडते हैं, दो पैराग्राफ के बीच में उससे कुछ ज्यादा गैप छोडें ताकि दूर से देखकर ही यह समझ आ जाए कि कहाँ से नया पैराग्राफ शुरू हो रहा है।

इसी प्रकार, हर नया पैराग्राफ लगभग एक ही स्केल से शुरू करें। बाईं तरफ, जहाँ से लिखने का स्थान शुरू होता है, वहाँ से लगभग दो शब्दों का खाली स्थान छोड़कर पैराग्राफ शुरू करना चाहिये और सभी पैराग्राफ उसी बिंदु से शुरू किये जाने चाहियें।

Develop India Group

परीक्षा में समय प्रबंधन

√ मुख्य परीक्षा के प्रायः सभी प्रश्नपत्रों में एक बडी समस्या यह भी आती है कि तीन घंटों में सभी प्रश्नों का उत्तर कैसे लिखा जाए? प्रत्येक प्रश्न को कितना समय दिया जाए? सभी प्रश्न किये जाएँ या कुछ को छोड दिया जाए? आदि आदि। कुछ लोगों का मानना है कि परीक्षा में समय का विभाजन प्रत्येक प्रश्न के लिये बराबर होना चाहिये किंतु मनोवैज्ञानिक स्तर पर इस बात को सही नहीं माना जा सकता।

√ शुरुआती उत्तरों का प्रभाव ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है और अंत तक उस प्रभाव के आधार पर लाभ या नुकसान होता रहता है। इसलिये, शुरुआती कुछ प्रश्नों पर तुलनात्मक रूप से अधिक समय दिया जाना चाहिये।

√ परीक्षा के अंतिम एक घंटे में अभ्यर्थी की सोचने और लिखने की गति अभूतपूर्व तरीके से बढ चुकी होती है। इसलिये, अंतिम कुछ प्रश्नों को तुलनात्मक रूप से कम समय मिले तो भी चिंता नहीं करनी चाहिये।

√ हो सकता है कि आप परीक्षा में समय प्रबंधन की इस रणनीति पर पूरी तरह न चल सकें और अंतिम समय में कई प्रश्न बचे रह जाएँ। जैसे मान लीजिये कि समय सिर्फ 20 मिनट रह गया हो और प्रश्न 5 या 6 बचे हुए हों। ऐसी स्थिति में भी कोशिश यही रहनी चाहिये कि कोई प्रश्न छूटे नहीं। अगर आप सभी प्रश्नों में सिर्फ फ्लो–चार्ट या डायग्राम के माध्यम से महत्त्वपूर्ण बिंदु भी लिख देंगे तो भी आपको ठीक–ठाक अंक मिलने की संभावना रहती है ।

√ उत्तर–पुस्तिका के अंतिम हिस्से तक पहुँचते– पहुँचते परीक्षक के मन में अभ्यर्थी के बारे में एक राय बन चुकी होती है और अंकों का निर्धारण प्रायः उस राय के आधार पर ही हो रहा होता है।

√ अगर आपके बारे में पहले ही अच्छी राय बन गई है तो अंतिम कुछ प्रश्नों में डायग्राम या सिर्फ बिंदु देखकर भी परीक्षक अच्छे अंक दे देगा क्योंकि वह आपके पक्ष में सकारात्मक अभिवृत्ति बना चुका होता है।

√ लेकिन अगर आप कुछ प्रश्न पूरी तरह छोड देंगे तो वह चाहकर भी आपको अंक नहीं दे सकेगा क्योंकि आपने उसे अपने विवेकाधिकार का इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं दिया।

सार यह है कि कोशिश करनी चाहिये कि एक भी प्रश्न छूटे नहीं। हाँ, जो प्रश्न अभ्यर्थी को आता ही नहीं है, वह तो उसे छोडना ही होगा। अगर आप उपरोक्त सभी बिन्दुओं को ध्यान रखते हुए उत्तर लिखते हैं तो निश्चित रुप से आपका उत्तर श्रेष्ठ होगा और आप अच्छे अंक प्राप्त कर सकेंगे, जिससे आपकी सफलता की संभावना बढ़ जाएगी।

यह एक नैसर्गिक प्रक्रिया है

हम अपने जीवन में जो कुछ भी सीखते हैं, वह सिर्फ अभ्यास के ही कारण सीखते हैं। मैं सीखने की बात कर रहा हूँ, जानने की नहीं। आप अपने ही जीवन को देखें। आपने बैठना सीखा, फिर चलना सीखा, फिर दौड़ना सीखा, बोलना सीखा, अपने हाथ से भोजन उठाकर खाना सीखा, पढ़ना सीखा, साइकिल और बाइक चलानी सीखी, गाना गाना सीखा, क्रिकेट खेलना सीखा; ये सब कैसे सीखा? आपके पास इसके सिवाय कोई भी दूसरा उत्तर नहीं होगा कि 'अभ्यास के द्वारा'। इनमें से कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है कि या कि अन्य में से भी कोई चीज ऐसी नहीं है, जिसे हम अभ्यास के बिना सीख पाते हैं। या कि एक ही बार में सीख लेते हैं। हाँ, जान जरूर लेते हैं। लेकिन सीखने का काम तो अभ्यास से ही सधता है।

मैं अक्सर अपने विद्यार्थियों से एक प्रश्न करता हूँ। मेरा प्रश्न यह होता है कि आपमें से कौन–कौन ऐसे हैं, जो गाते हैं, फिर चाहे वे अकेले में ही गुनगुनाते क्यों न हो। इसके उत्तर में लगभग–लगभग सभी के हाथ उठ जाते हैं। फिर मैं उनसे अगला यह प्रश्न करता हूँ कि आप लोगों में से गायक कौन–कौन हैं। आप ताज्जुब करेंगे कि अब पांच प्रतिशत हाथ भी नहीं उठते। तो यहाँ संकट यह है कि गायक उसे कहते हैं, जो गाता है। चूंकि सभी गाते हैं, तो सभी को गायक होना चाहिए था। लेकिन जब मैं पूछता हूँ कि गायक कौन–कौन हैं, तो 95 प्रतिशत लोग खुद को परिभाषा की इस सीमा से बाहर कर लेते हैं। क्या आपको यह कुछ विचित्र विरोधाभास नहीं लगता? तो फिर यह है क्या?

दरअसल यहाँ बात व्याकरण की है, जिसे आप अनुशासन कह सकते हैं। वैसे तो हम सभी कभी न कभी गाते ही हैं, लेकिन गाया कैसे जाता है, यह हम नहीं जानते, क्योंकि हमने उसे सीखा नहीं है। बिना सीखे वैसे ही गाने लगे हैं। यानी कि हम जो गा रहे हैं, वह नैसर्गिक तौर पर एक सामान्य–सा गुण है। लेकिन यह नैसर्गिक गुण हमें गायक कहलाने का अधिकार नहीं दे देता। गायक तो वह होगा, जिसने बाकायदा स र ग म

की शिक्षा ली हो और उसका अभ्यास भी किया हो। गायक वह होगा, जो गाने के व्याकरण को जानता है। वह व्याकरण को न केवल जानता ही है, बल्कि उसने उसका अभ्यास भी किया है। यदि उसने अभ्यास नहीं किया है, किन्तु व्याकरण को जानता है, तो वह इस विधा का शिक्षक तो हो सकता है, गायक नहीं हो सकता। कुल–मिलाकर यह कि गायक बनने के लिए उसे इसको विधिवत सीखना पड़ेगा और सीखने का यह काम अभ्यास के बिना नहीं हो सकता।

आपको दुनिया में शायद ही कोई ऐसा कलाकार मिलेगा, जो अभ्यास न करता हो। जैसे ही वह खुद को अभ्यास से अलग करता है, उसकी कलात्मक चमक फीकी पड़ने लगती है। कलाकार ही नहीं, बल्कि ऐसा कोई भी व्यक्ति, जो लगातार परफेक्शन को पाने की कोशिश में लगा हुआ है, अभ्यास करता ही करता है। वह तब भी अभ्यास करता है, जब उसे उसकी जरूरत नहीं होती। आपको क्या लगता है कि क्रिकेट का खिलाड़ी केवल उन्हीं दिनों प्रेक्टिस करता है, जब उसे मैच खेलना होता है? आप उसे जाकर पूछिए तो वह आपको बताएगा कि जहाँ तक अभ्यास की बात है ''मुझे तो रविवार भी नहीं मिलता।'' बल्कि सच तो यह है कि जब क्रिकेट मैच नहीं होते, तब वे सबसे ज्यादा अभ्यास कर रहे होते हैं।

दोस्तो, मैंने इस बात का थोड़ा विस्तार से उल्लेख इसलिए किया है, क्योंकि इस बारे में मेरा यह बहुत कटु अनुभव रहा है कि कई–कई बार कहने के बावजूद मैं विद्यार्थियों को यह विश्वास दिला पाने में बुरी तरह असफल रहा हूँ कि ''अभ्यास करना चाहिए'। मुझे लगा यदि शायद मैं अपनी बात को कुछ अन्य लोगों के रूबरू रखकर कहूँ तो शायद आप पर उसका कुछ प्रभाव पड़े और आप ऐसा करने लगें।

अभ्यास की महिमा पर तुलसीदास जी ने दो बड़ी खूबसूरत पंक्तियां लिखी हैं। उनके शब्द हैं–

करत–करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान
रसरि आवत जात है सिल पर परत निसान।।

इसका अर्थ यह है कि अभ्यास करते–करते एक मूर्ख व्यक्ति भी ज्ञानी बन जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कि कुंए से बाल्टी और रस्सी द्वारा पानी निकालते समय जब रस्सी बार–बार कुंए के पत्थर से रगड़ खाती है, तो उस पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं। सिविल सर्विस परीक्षा की तैयारी के बारे में भी यह सच है। जो शुरू से ही बहुत अच्छे विद्यार्थी रहे हैं, निश्चित रूप से उनमें ऐसे कुछ विशेष गुण तो होते ही हैं, जिनके कारण वे हमेशा अच्छे परिणाम लाते रहते हैं। यानी कि उनकी अपनी एक स्थिर क्षमता होती है। उनका अपना एक स्तर होता है। यह बात अलग है कि ठीक यही स्तर उन्हें सिविल सर्विस के स्तर के समकक्ष लाकर खड़ा नहीं कर देता। फिर भी कुछ तो अतिरिक्त लाभ की स्थिति में वे होते ही हैं। यहाँ मैं उनके बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। तुलसीदास जी की 'जड़मति' की परिभाषा के दायरे में ये नहीं आएंगे। लेकिन वे क्या कारण हैं कि इसी परीक्षा में सफल होने वाले लगभग 50 प्रतिशत विद्याथी द्वितीय श्रेणी और यहाँ तक कि कुछ विद्यार्थी तृतीय श्रेणी के भी होते हैं? इसका उत्तर इस सत्य में निहित है कि ये वे विद्यार्थी हैं, जिन्होंने अभ्यास कर–करके अपनी गुणवत्ता को बदल लिया है।

यहाँ एक बात और है। मैं पिछले लगभग तीस वर्षो के परीक्षा–परिणामों के आधार पर यह बात दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो विद्यार्थी सिविल सर्विस में सफल होते हैं, उनमें सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की होती है, जिनका अटेम्प्ट तीसरा, चौथा या उससे भी अधिक होता है। कम से कम पहला तो नहीं ही होता। यदि हम जानना चाहें कि ऐसा क्यों होता है, तो आमतौर पर इसका उत्तर 'अनुभव' शब्द से मिलता है। यानी कि परीक्षा देते–देते उन्हें परीक्षा देने का अनुभव हो गया है। उनमें प्रौढ़ता आ गई है। उनकी समझदारी बढ़ गई है। इसी का फायदा उन्हें मिलता है। क्या आपको लगता है कि इस अनुभव शब्द में कहीं न कहीं अभ्यास शब्द के गुण भी शामिल हैं।

मैं यहाँ यह मानकर चल रहा हूँ कि यदि अनुभव प्राप्त करने का यह काम हम किसी अन्य माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं, तो प्राप्त क्यों नहीं कर लेना चाहिए। लिखने का अभ्यास इसी तरह का एक माध्यम है।

यहाँ मैं अपनी एक अन्य बात को स्पष्ट करने के लिए साइकिल, बाइक या कार चलाने का उदाहरण देना चाहूँगा। आप उन दिनों को याद करने की कोशिश कीजिए, जब आप इन तीनों में से कोई एक वाहन चलाना सीख रहे थे। शुरूआत में कितना भय लगता था। एक–एक काम को याद कर–करके करना पड़ता था कि गीयर बदलने से पहले क्लच को दबाओ। फिर क्लच को धीरे–धीरे छोड़ो। ब्रेक के लिए दाहिने पैर का इस्तेमाल करो आदि–आदि। लेकिन जब आप चलाने लगे और चलाते–चलाते कुछ दिन हो गए, तो क्या आपको उसी तरह से भय लगता था और कुछ भी करते समय करने की तकनीकी को याद करना पड़ता था? या कि अब सारी प्रक्रियाएं अपने–आप हो रही थीं। जब भी जिसकी जरूरत पड़ रही थी, आप याद किए बिना ही उसे कर रहे थे। यहाँ तक कि सोचते भी नही थें। यदि आप गाड़ी चला रहे हैं और आपको अचानक ब्रेक लगाना पड़ गया, तो आप देखेंगे कि अपने–आप ही आपका दाहिना पांव ब्रेक को दबायेगा न कि बांया पांव क्लच को। जबकि दोनों ही पांव किसी न किसी के ऊपर रखे हुए होते हैं। यहाँ सोचने की बात यह है कि आपने उस भय को इतनी निडरता में कैसे बदला? और यह भी कि उस समय जिसे

इतनी सतर्कता के साथ करना पड़ता था, उसे आप इतनी सहजता से कैसे कर रहे हैं? यहाँ तक पहले की तुलना में अधिक अच्छे तरीके से भी? यहाँ सोचने की बात यह है कि यह सब हुआ कैसे?

इस उदाहरण के माध्यम से मैं कहना यह चाह रहा हूँ कि जब हम किसी भी तरह का अभ्यास करते हैं, तो अभ्यास की यह प्रक्रिया धीरे–धीरे उन सब को हमारे अवचेतन मन में पहुँचा देती है। वे हमारे चेतन मन से होते हुए अवचेतन मन में पहुँचकर वहाँ कुछ इस तरीके से दर्ज हो जाते हैं कि जब भी उनमें से किसी की जरूरत पड़ती है, वे हमारी मदद करने के लिए तत्काल उपस्थित हो जाते हैं। सच पूछिए तो अभ्यास का उद्देश्य केवल परफेक्शन प्राप्त करना नहीं होता, बल्कि उस पूरी की पूरी प्रक्रिया को अपने अवचेतन मन तक पहुँचाना भी होता है। वैसे इसे यूं भी कहा जा सकता है कि कोई प्रक्रिया अवचेतन मन में दर्ज हो जाती है, तो वह प्रक्रिया परफेक्शन को तो प्राप्त नहीं करती, लेकिन वहाँ से परफेक्शन की यात्रा शुरू हो जाती है। अब यह हमारे ऊपर है कि हम इस रास्ते पर कितनी लम्बी यात्रा करते हैं। यात्रा जितनी लम्बी होगी, परफेक्शन उतना ही अधिक होगा।

अब यह आपके ऊपर है कि आप सिविल सर्विस परीक्षा में लिखे गये अपने उत्तरों को कितना परफेक्ट बनाना चाह रहे हैं। हो सकता है कि आप बिना अभ्यास के भी ऐसे उत्तर लिखकर आ जाएं, जो आपको सफलता दिला देंगे। यहाँ तक कि आप भारतीय प्रशासनिक सेवा में भी आ जाएंगे। लेकिन यहाँ इस बात की संभावना तो बच ही जाती है कि यदि आपने अभ्यास किया होता तो आपके ये ही उत्तर और अधिक अच्छे बने होते और आपको पहले से अधिक नम्बर मिलते। यदि ऐसा होता, तो रैंकिंग पर फर्क पड़ता। आप जानते ही हैं कि किसी भी सेवा में आगे का कैरियर इस बात पर निर्भर करता है कि अपने बैच में आपकी रैंकिंग क्या रही है। यदि आप थोड़ा सा वक्त अभ्यास को देकर और उस अभ्यास के दौरान होने वाले तनाव को झेलकर अपनी रैंकिंग बेहतर कर सकते हैं, तो ऐसा क्यों नहीं किया जाना चाहिए। और कुछ नही तो कम से कम नुकसान तो नहीं ही होगा।

अभ्यास के मायने

एक यह बात आपके दिमाग में बिल्कुल साफ होनी चाहिए कि जब उत्तर लिखने के अभ्यास करने की बात कही जाती है, तो उसका सीधा–सीधा मतलब इस बात से होता है कि कुछ ऐसे प्रश्नों के उत्तर लिखे जाये, जिनके परीक्षा में पूछे जाने की सबसे अधिक संभावना है। इसका मतलब यह कतई नहीं कि जो भी प्रश्न मन में आया उसी का उत्तर लिखना शुरू कर दिया गया। प्रश्नों का चयन कैसे करेंगे इसके बारे में इसी पुस्तक में एक अलग अध्याय में बताया गया है। वहाँ से आप मदद ले सकते हैं। लेकिन इससे पहले कि आप लिखने का अभ्यास करें, मुझे लगता है कि यह बताना बहुत उपयुक्त होगा कि वस्तुतः जब उत्तर लिखने के अभ्यास की बात कही जाती है, तो उसका अर्थ क्या होता है।

मैंने अक्सर पाया है कि अधिकांश विद्यार्थी इसे महज एक औपचारिकता के तौर पर लेते है। उन्हें लगता है कि कुछ उत्तर लिखने चाहिए और वे उत्तर लिखकर अपने आपको संतुष्ट कर लेते हैं। इससे आपको संतुष्टि तो मिल जाती है, लेकिन आप जिस उद्देश्य से उत्तर लिख रहे हैं, वह उद्देश्य पूरा नहीं होता। इससे तो अच्छा यही है कि उत्तर लिखा ही न जाए। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि ऐसी स्थिति में आप बेकार में ही अपना समय नष्ट कर रहे हैं। साथ ही अपनी क्षमता भी लगा रहे हैं। बेहतर होगा कि आप इस समय का इस्तेमाल किसी और अच्छे और सही काम के लिए कर लें।

इसलिए मुझे लगता है कि आपके सामने मैं इस बात को स्पष्ट करूँ कि वस्तुतः इसका अर्थ होता क्या है।

पहली और सबसे बड़ी बात तो यह कि उत्तर लिखने का मतलब कभी भी अपने पढ़े हुए को दुहराना नहीं होता। दुहराने का काम तो आप मन ही मन में भी कर सकते हैं। बोलकर भी कर सकते हैं। कुछ–कुछ प्वाइंट लिखकर भी कर सकते हैं। इसलिए अभ्यास को दुहराने का पर्याय समझने की भूल नहीं की जानी चाहिए। जब आप दुहराने की नीति को लेकर चलते हैं, तो यह स्वाभाविक ही है कि आप कभी भी पूछे गए प्रश्न के अनुकूल अपना उत्तर नहीं लिख पाएंगे। उस समय आपके दिमाग में लगातार यही चलता रहेगा कि ''मैं ऐसा क्या करूँ कि इसके बारे में मुझे जो कुछ भी मालूम है, उसे मैं लिख डालूँ।'' यह दुहराना हुआ, उत्तर लिखना नहीं। ज्यादातर विद्यार्थी उत्तर लिखने के नाम पर दुहराने का ही काम करते हैं।

दरअसल, उत्तर लिखने के अभ्यास के पीछे कई उद्देष्य होते हैं, जिनमें से एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है–लगातार स्वयं को करेक्ट करते जाना। मेरी इस बात को आप तब ज्यादा अच्छे से समझ पाएंगे, जब एक उत्तर लिखने का अभ्यास करें। जब आप उत्तर लिख लेते हैं, तो निश्चित रूप से आपको उसे जाँचना भी चाहिए। जाँचने का मतलब यह नहीं कि आप उसे पढ़ें, और फैसला कर लें कि ''मैंने कैसा लिखा है''। यहाँ जाँचने का मतलब यह है कि अपने लिखे हुए उत्तर को अपने पास मौजूद सामग्री से मिलाकर देखें। आप पाएंगे कि कई बातें आपसे छूट गई हैं। छूट ही

जाती हैं। यहाँ आपको यह सोचना चाहिए कि ऐसा आपसे क्यों हुआ। अब जो तथ्य छूट गए थे, वे आपके दिमाग में स्थायी रूप से दर्ज हो जाएंगे। इस प्रकार आपका उत्तर लगातार करेक्ट होता चला जाएगा।

इस अभ्यास के जरिए आप क्रमशः उत्तर देने के परफेक्शन के अधिकतम निकट पहुँच सकते हैं। यहाँ परफेक्शन से मेरा मतलब केवल तथ्यों की सम्पूर्णता से नहीं है, बल्कि इसके साथ ही साथ लिखने की शैली, निर्धारित शब्दों की सीमा, सटीक भाषा का प्रयोग तथा उत्तर के सम्पूर्ण ढाँचे से भी है। सच पूछिए तो उत्तर लिखना विज्ञान कम, कला अधिक है। यह एक प्रकार से स्वयं को अभिव्यक्त करने का तरीका है, जो तथ्यों और भाषा के माध्यम से व्यक्त होता है। बहुत से विद्यार्थी ऐसे होते हैं, जिनके पास तथ्य तो कमाल के होते हैं, लेकिन जब उन तथ्यों को बताने की बारी आती है, तब वे अपने–आपको बेहद फिसड्डी साबित कर देते हैं। ऐसा केवल बोलने में ही नहीं होता, बल्कि लिखने में भी होता है।

तो फिर इसका उपाय क्या है? इसका एकमात्र उपाय यह है कि अधिक से अधिक लिखने का अभ्यास किया जाए। इससे आप मंजते चले जाएंगे और धीरे–धीरे आपके लिखने की यह शैली आपके अवचेतन मन में स्थिर होकर आपको बेहतर बना देगी।

मैंने अपने अनुभव से इस कमाल को जाना है कि इसके माध्यम से हम विस्मृति को अपनी स्मृति में शामिल कर लेते हैं। यहाँ मैं थोड़ी हटकर बात कह रहा हूँ। इसका संबंध उत्तर लिखने से उतना नहीं है, जितना कि तथ्यों को लिख लेने से है। पहला उपाय तो यह है कि हम तथ्यों को पढ़कर रट लें। दूसरा उपाय यह है कि हम तथ्यों को पढ़ें, रटें भी और इसके बाद उन्हें लिख भी लें। वस्तुतः जैसे ही हम उसे लिखते हैं, वे तथ्य हमारे दिमाग में अधिक गाढ़े रूप में अंकित हो जाते हैं। इससे उनमें वहाँ अधिक समय तक बने रहने की ताकत पैदा हो जाती है। ऐसा तो नहीं होता कि फिर हम उसे कभी भूलेंगे ही नहीं, लेकिन यह अवश्य हो जाता है कि कम से कम परीक्षा देने तक तो वे तथ्य वहाँ बने ही रहते हैं।

उत्तर लिखने के अभ्यास का एक बड़ा लाभ यह होता है कि वह विषय हमारे दिमाग में एक विशेष लय के साथ रच–बस जाता है। उत्तर की एक लय हम महसूस करते हैं और जब परीक्षा में उसी टॉपिक पर उत्तर लिखने की स्थिति बनती है, तो हमारे अन्दर मौजूद यह लय एक जादू की तरह काम करती है। तब हमारे दिमाग को उत्तर लिखने के लिए बहुत अधिक जद्दोजहद नहीं करनी पड़ती। क्रम से तथ्य दिमाग में आते चले जाते हैं और हम कागज पर उन्हें उतार देते हैं। इसमें बहुत मजा आता है।

जब तथ्य अपने–आप दिमाग में आने लगें और हम उन तथ्यों को पहले से ही मौजूद एक ढाँचे के अन्तर्गत बिना किसी दबाव और द्वन्द्व के कागज पर उतारने लगें, तब आप समझ सकते हैं कि इससे कितने अधिक समय की बचत होगी। उत्तर लिखने में जो समय लगता है, वह दो विशेष कारणों से। पहला तो यह कि समझ में नहीं आता कि इस प्रश्न के उत्तर में हम क्या–क्या लिखें। दूसरा यह कि बाद में जब लिखने की शुरूआत कर देते हैं, तो तथ्य दिमाग में जितनी तेजी से आने चाहिए, उतनी तेज गति से नहीं आ पाते। फलस्वरूप लिखने की स्पीड अपने–आप ही कम हो जाती है। निश्चित रूप से इसके कारण उसी उत्तर को पूरा करने में उसकी तुलना में अधिक समय लग जाता है, जिसे हम बहुत अच्छी तरह से जानते थे या फिर जिसका हमने पहले से अभ्यास कर रखा है। यहाँ जितने समय की आपकी बचत हो रही है, उसका इस्तेमाल आप उन प्रश्नों को अच्छी तरह हल करने में कर सकते हैं, जहाँ थोड़ा सोच–विचार करने की जरूरत हो।

ऐसा कभी नहीं होगा कि आपने चालीस प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास किया है और उसमें से बीस प्रश्न पूछ लिए जाएंगे। ऐसा हो ही, इसकी जरूरत भी नहीं है। जरूरत सिफ इस बात की होती है कि आप यदि चालीस प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं, तो उनमें से छः–सात प्रश्न परीक्षा में पूछ लिए जाएं। इतने से ही आप कमाल कर जाएंगे। खासकर दूसरों की तुलना में तो कमाल हो ही जाएगा। यह कम बड़ी उपलब्धि नहीं होगी। सच पूछिए तो ऐसा ही किया जाना चाहिए।

यदि मैं सामान्य अध्ययन के उत्तर लिखने की बात करूँ, तो मेरी यह राय होगी कि एक पेपर के लिए बीस प्रश्नों के उत्तर लिखने का अभ्यास किया जाना पर्याप्त होगा। हाँ, यह जरूर है कि ये बीस प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हों। साथ ही ये प्रश्न अलग–अलग क्षेत्रों से लिए गए हों। इससे आपके अन्दर हर तरह के विषय से संबंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने की ताकत आ जाएगी।

निश्चित रूप से जब आप लिखने का अभ्यास करते हैं, तो ऐसा करके आप स्वयं को विस्मृति की कमजोरी से बचा लेते हैं। यह बचाव केवल इसी रूप में नहीं होता कि जब आप अपने लिखे हुए उत्तर को जाँचते हैं, तो छूटे हुए अंशों पर ध्यान जाने के कारण वे तथ्य दिमाग में अच्छी तरह बैठ जाते हैं। बल्कि इससे भी कहीं अधिक वे इस रूप में आपकी मदद करते हैं कि जब आप लिखने के बारे में सोचते हैं, तो केवल वही नहीं सोचते जो आपको लिखना होता है। बल्कि पता नहीं कौन–कौन से अन्य विचार और कौन–कौन से अन्य तथ्य चाहे–अनचाहे रूप में आपके मस्तिष्क के पटल पर उभरते हैं। फिर आप उनमें से कुछ को लेते हैं और बहुत कुछ को छोड़ भी देते हैं। इस प्रकार दिमाग के दायरे में उस टॉपिक से संबंधित लगभग–लगभग सभी तथ्य आ जाते हैं।

Develop India Group

जबकि यदि आप अभ्यास के स्थान पर पढ़े गए विषय को सिर्फ दुहराने का काम करते हैं, तब जरूरी नहीं कि सभी तथ्य आपके दिमाग में आएं। ऐसी स्थिति में विचारों के आने की संख्या तो और भी कम हो जाती है। इसका कारण साफ है कि दुहराने के दौरान आपका दिमाग किसी भी तरह की जद्दोजहद से नहीं गुजरता। वह बहुत ही सरलता के साथ अपना काम पूरा कर लेता है। इस समय दिमाग की गुरूत्वाकर्षण शक्ति उतनी तीव्र नहीं होती, जितनी उत्तर लिखने के दौरान होती है। इसलिए दुहराने की तुलना में उत्तर लिखने का अभ्यास हमारे लिए अधिक फायदेमंद होता है।

●●●

Develop India Group